६ मेम्ने का विवाह
अनन्तकाल में अंतर्दृष्टि

प्रश्न: उन विवाह समारोह के विषय में सोचिए जिनमें आप सम्मलित हुए हैं। उन में से सबसे ज़्यादा यादगार कौन सा समारोह रहा? और वह किस कारण से विशेष रहा?

परमेश्वर को ढूँढना और जानना

एरविन लुटज़र बगदाद के एक व्यापारी की कहानी बताते हैं जिसने किसी काम से अपने सेवक को बाज़ार भेजा। जब सेवक ने अपना काम पूरा कर लिया और बाज़ार से निकलने ही वाला था, कि वह एक मोड़ पर श्रीमती मृत्यु से मिला। उसके चेहेरे के भाव से वह इतना डर गया कि वह बाज़ार से निकल कर तेज़ी से घर चला गया। उसने अपने स्वामी को बताया कि क्या हुआ था और उनका सबसे तेज़ घोड़ा माँगा ताकि जितना संभव हो वह श्रीमती मृत्यु से उतना दूर जा सके। एक घोड़ा जो रात होने से पहले उसे सुमेरा पहुँचा दे। बाद में उसी दोपहर व्यापारी भी बाज़ार गया और उसकी भी मुलाकात श्रीमती मृत्यु से हुई। उसने पूछा, "आज सुबह तुमने मेरे सेवक को हैरान क्यों कर दिया?" श्रीमती मृत्यु ने उत्तर दिया, "मेरा तुम्हारे सेवक को चौंकाने का इरादा नहीं था बल्कि मैं तो स्वयं ही चौंक गयी थी। आज सुबह तुमहारे से सेवक को बगदाद में देख कर मैं इसलिए चौंक गयी क्योंकि आज रात सुमेरा में मेरी उससे मुलाकात है।

आपका और मेरा मृत्यु के साथ मिलने का एक समय निर्धारित है। हम उससे भाग नही सकते और न उससे छिप सकते हैं। हम केवल उसका समाना कर सकते है। “27 और जैसे मनुष्यों के लिये एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है।” (इब्रानियों ९:२७) धन्यवाद हो कि स्वर्ग में वह ईश्वर है जिसने कहा है, “मैं तुझे कभी न छोड़ूंगा, और न कभी तुझे त्यागूंगा।” (इब्रानियों १३:५) हमें मृत्यु का सामना अकेले करने की आवश्यकता नहीं है। मसीह ने कहा है कि वह युग के आने तक हमारे साथ रहेगा।
जब जॉर्ज बुश (सीनियर) उप राष्ट्रपति थे, तो पूर्व कम्युनिस्ट रूसी नेता लीयोनिड ब्रेज़ेनिव के अंतिम संसकार के समय उन्होंने यू.एस का प्रतिनिधित्व किया था। ब्रेज़ेनिव की विधवा द्वारा किए गए शांत विरोध से बुश बेहद भावुक हो गए थे। वह ताबूत के पास बिना हिले-डुले तब तक खड़ी रहीं जब तक उसे बन्द नहीं कर दिया गया। तब, जैसे ही सैनिकों ने ढक्कन छुआ ब्रेज़ेनिव की पत्नी ने बहुत बहादुरी और आशा का कार्य किया, एक ऐसा भाव जो अब तक के सत्याग्रह आन्दोलन के कार्यों में बहुत ही खास माना जाना चाहिए। उसने नीचे झुक कर अपने पती के छाती पर क्रूस का चिह्न बनाया। वहाँ उस धर्म से संबंध न रखनेवाले, ईश्वर को न माननेवाले महल में उस व्यक्ति की पत्नी इस बात की आशा रखती थी कि उसका पति गलत था। वह इस बात की आशा रखती थी कि एक दूसरा जीवन है और यह कि इस जीवन का सबसे अच्छा प्रतिनिधित्व यीशु द्वारा किया गया जो क्रूस पर मर गया और यही यीशु शायद अब भी उसके पति पर करुणा करे। एक तरफ़ कम्युनिस्ट राष्ट्र का एक अगुवा था जो मसीह के ज्ञान और उसके वचन को मिटाना चाहता था, और दूसरी तरफ़ उसकी पत्नी एक गुप्त विश्वासी जिसके हृदय में अनन्तकाल के विचार थे।
हमने अब तक पिछले पाँच अध्ययनों मे यह देखा कि परमेश्वर भविष्य के बारे में क्या कहता है और हम अनन्तकाल कहाँ बितायेंगें। जिस तरह से यह संसार तैयार किया गया है, हमें उससे बढ़कर होने के लिए बनाया

गया है। हमारा एक शत्रु है जो केवल इस संसार की ही बातो में हमें उलझाए रखना चाहता है। वह दुशमन शैतान मसीह में हमारे अगले जीवन, एक बेहतर जीवन, के हमारे सारें विचारों को कुचल देना चाहता है। वह नही चाहता कि हम अनन्तकाल पर ध्यान करें बल्कि यह चाहता है जिस भौतिक संसार में हम हैं उससे आकार्षित हों और बेवकूफ़ और बेअसर रहें। शत्रु यह नही चाहता कि हम इस बात को समझे कि हम केवल इस वर्तमान जीवन से गुज़र रहें हैं और दूसरे जीवन के लिए तैयार किए जा रहें हैं। यीशु ने कहा, यदि मनुष्य मर भी जाए तो भी जीएगा (यहुन्ना ११:२५) अनन्तकाल के बारे में विचारों को आप नकार सकते हैं और उनको आने से रोक भी सकतें हैं लेकिन यह अन्तर्ज्ञान कि मृत्यु अन्त नही है नकारा नही किया जा सकता। स्वर्ग में वह ईश्वर है जिसने आप पर आस लगा रखी है, वह आपको बुलाता है कि आप उसके घर का मार्ग पा लें। "तुम मुझे ढूंढ़ोगे और पाओगे भी; क्योंकि तुम अपने सम्पूर्ण मन से मेरे पास आओगे"। (यिर्मयाह २९:१३) यीशु ने अपने चेलों से कहा:

2 मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते, तो मैं तुम से कह देता क्योंकि मैं तुम्हारे
लिये जगह तैयार करने जाता हूं। 3 और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूं, तो फिर आकर तुम्हें अपने
यहां ले जाऊंगा, कि जहां मैं रहूं वहां तुम भी रहो। 4 और जहां मैं जाता हूं तुम वहां का मार्ग जानते हो। 5 थोमा ने
उस से कहा, हे प्रभु, हम नहीं जानते कि तू हां जाता है तो मार्ग कैसे जानें? 6 यीशु ने उस से कहा, मार्ग और
सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता। (यहुन्ना १४:२-६)

उसने कहा है कि वह आयेगा और विश्वासियों को अपने साथ होने के लिए ले जाएगा। क्या तुम उस पर विश्वास करते है? क्या आपको उसके घर का मार्ग मिला है? मार्ग एक दिशा नहीं है, यह एक व्यक्ति है, स्वयं प्रभु यीशु मसीह। उसने आपके पापों का दाम चुका दिया है और आपको आमंत्रित करता है कि आप उसे अपने जीवन में अपना लें और अनन्त जीवन का मुफ़्त वरदान पा लें। (इफ़ीसियों २:८-९) आप वह आत्मविश्वास केवल तभी पा सकते हैं कि आप घर पहुँच गए हैं जब आप प्रभु यीशु मसीह को व्यक्तिगत रीति से जान जाएँगें। क्या आपको यीशु की माँ, मरियम की एक एकलौती आज्ञा याद है? हाँ, मरियम ने संसार को एक आज्ञा दी जो बाईबिल में लिखी है। गलील के काना के विवाह में सेवकों से बात करते हुए उसने कहा, जो कुछ वह (यीशु) कहे वही करो। (यहुन्ना २:५) इस शब्दों में बहुत ज्ञान है और उन पर ध्यान देने से हमारे लिए भलाई होती है।

यीशु ने कहा, "जिस के पास मेरी आज्ञा है, और वह उन्हें मानता है, वही मुझ से प्रेम रखता है, और जो मुझ से प्रेम रखता है, उस से मेरा पिता प्रेम रखेगा, और मैं उस से प्रेम रखूंगा , और अपने आप को उस पर प्रगट करूंगा।" (यहुन्ना १४:२१) हम आज्ञा मानकर मसीह को दिखाते हैं कि हम उसे कितना प्यार करते हैं। यह मुख्य बात है - सारी सृष्टि के ईश्वर के साथ प्रेम करना। जब आप सचमुच में वह सब समझ जाते हैं जो मसीह ने आपके लिए किया है तोआप कुछ और नही बल्कि उसके साथ गहरा प्रेम करने लगते हैं। कभी-कभी जो बातें बाईबिल में स्पष्टता से लिखा है उसे हम देख नहीं पाते वह यह कि एक प्रेमी परमेश्वर पतित मानवता को खोज रहा है अपने आपसे मेल कराने के लिए। शुरुआत से अंत तक, उत्पत्ति से प्रकाशितवाक्य तक हम देखते हैं कि परमेश्वर अपने लिए सारे राष्ट्रों से लोगों को बुला रहा है - ऐसे लोग जो परमेश्वर को जान पाएँ - न केवल उसके बारे में जाने बल्कि उसको घनिष्ठता से जान पाए। चाहें आप जिस भी देश में रहते हों या चाहे आपने जो भी किया

हो, मसीह ने आपके लिए मार्ग निकाला है कि आप परमेश्वर को एक नज़दीकी, घनिष्ठ, प्रेम सम्बन्ध में जान सकें।

प्रश्न १) जब पूछा गया कि सबसे बड़ी आज्ञा क्या है, तो यीशु ने कहा, तू अपने परमेश्वर से अपने सारे हृदय, सारे मन और सारी बुद्धि से प्रेम रख। (मत्ती २२:३७) परमेश्वर से प्रेम करना इतना महत्वपूर्ण क्यों है?

कलीसिया - मसीह की दुल्हिन

द लास्ट ऑफ़ द मोहिकंज़ मेरी पसंदीदा चलचित्र में से एक है। अभिनेता दानिय्येल डे लूईस की गर्लफ्रेंड है कोरा जो कि एक युद्धरत इन्डियन जनजाती द्वारा पकड़ी जानेवाली है। उनकी एक मात्र फिर से मिलने की आशा यह है कि वह उसको फिलहाल छोड़ दे और कुछ समय बाद उससे और उसकी बहिन से मिल ले। दानिय्येल डे लूईस उससे कहता है, मैं तुम्हें ढूँढ लूँगा; बस जीवित रहना, चाहे जो हो जाए। चाहे जितनी भी देर लगे, चाहे जितने भी दूर हों, मैं तुम्हें ढूँढ लूँगा।" आप क्या समझते हैं कि रोमाँस का जो भाव हमें दिया गया है वह कहाँ से आया है? ज़ाहिर है, स्वर्ग से, ब्रह्माण्ड के ईश्वर को उसके लोगों के पापों के कारण उन से अलग कर दिया गया है। (यशायाह ५९:२) वह कई हज़ार वर्षों से यह इच्छा रखता है कि अपने लोगों से फिर मिल जाए और उन्हें नए यरुशलेम में लाय वह उनके साथ निवास कर सके। उसकी बुलाहट क्या है? "आदम तुम कहाँ हो?" (उत्पत्ति ३:९) शत्रु को सुनने के परिणाम्स्वरूप, आदम और हव्वा अदन की वटिका में यहोवा परमेश्वर से छिप रहे थे। (उत्पत्ति ३:८)आज भी बहुत सारे लोग परमेश्वर से छिप रहे हैं लेकिन वह उन्हें बुलाता है यह इच्छा रखते हुए कि वे प्रत्युत्तर देंगे और अपनी स्वयं की धार्मिकता को छोड़ देंगे जो कि मैले-चिथड़ों के समान है और उसकी क्षमा को प्राप्त करेंगे अर्थात मसीह की धार्मिकता का वरदान। चाहे कितनी भी देर क्यों न लगे, चाहे आप उससे कितने भी दूर क्यों न हों, वह चाहता है कि आपको अपनी ओर खींच ले यदि आप अपना हृदय उसके प्रति खोल दें। "कोई मेरे पास नहीं आ सकता, जब तक पिता, जिस ने मुझे भेजा है, उसे खींच न ले; और मैं उस को अंतिम दिन फिर जिला उठाऊंगा।"(यहुन्ना ६:४४) यह सच है कि आप इन शब्दों को पढ़ रहें हैं इस बात का सचमुच में एक प्रमाण है कि पिता आपको अपनी ओर बुला रहा है।

वह उस भेड़ का महान चरवाहा है जो पहाड़ियों पर भटकता है उस एक भेड़ को ढूँढने के लिए जो इस बात को पहचान जाती है कि वह झुण्ड के चरवाहे से बहुत दूर चली गयी है। (लूका १५:४) वह अपने लोगों को जानता है और उनहें नाम लेकर बुलाता है। मनुष्य को यह दिखाने के लिए कि उसे पाप से अलग होने के लिए एक उद्धारकर्ता की ज़रूरत है वह समय के साथ कई हदों तक गया है। परमेश्वर की योजना में उसे अपने प्रिय जन के लिए प्रेम से भरी एक ऐसी चीज़ करने बुलाया गया था, जो शायद ही कोई कर सके। वह उनके लिए मर गया कि उनहें पाप से मुक्त कर दें। प्रेम का यह कार्य सारे संसार में सबसे मज़बूत, सबसे शक्तिशाली चीज़ को लेकर आता है - प्रेम की ताकत, अगापे प्रेम। इस प्रकार का प्यार आत्म-बलिदानी है और उस व्यक्ति की ओर से प्रेम का प्रत्युत्तर लाता है जो ऐसा अनुग्रह प्राप्त करता है। परमेश्वर ने अपने पुत्र को संसार में भेजा कि अपनी दुल्हिन को जीते और उसे अपने पास ला सके, विशेष कर उन्हें जो उससे बहुत दूर हैं।
यह दिखाने के लिए कि हम कितने खास हैं, पौलूस कोरिन्थ की कलीसिया को लिखते हुए जानबूझकर फिर से जनमे विश्वासी के बारे में बात करता है कि वह स्वयं मसीह के विवाह के लिए तैयार किए जा रहे हैं।

"क्योंकि मैं तुम्हारे विषय मे ईश्वरीय धुन लगाए रहता हूं, इसलिये कि मैं ने एक ही पुरूष से तुम्हारी बात लगाई है, कि तुम्हें पवित्र कुंवारी की नाईं मसीह को सौंप दूं"। (२ कुरिन्थियों ११:२)

वह चाहता है कि वे घर लौट आएँ। एक पुरुष और स्त्री के बीच शादी समारोह इस बात की तस्वीर है कि मसीह में परमेश्वर ने अपनी कलीसिया, वह लोग जो उसके अपने हैं, के लिए क्या किया है। प्रेरित पौलूस उस सेवा को जो परमेश्वर ने उनको दी है इस प्रकार से देखतें हैं जो कि मसीह की दुल्हिन को तैयार करते हैं ताकि वह अपने विवाह पर शुद्ध और निष्कलंक हो। चाहे आपने जो भी किया हो या चाहे आप जहाँ भी रहे हो दुल्हा आपको साफ़ कर सकता है या आपको साफ़, शुद्ध और निष्कलंक कर दिया है। यदि आप मसीही हैं तो आपको शुद्धता और धार्मिक्ता का वस्त्र पहना दिया गया है जो उसने कलवरी के क्रूस पर आपके लिए खरीदा। वह अपनी दुल्हिन को घर बुला रहा है।
अकेले, पौलूस ही विवाह सम्बंध के उद्धाहरण का इस्तेमाल नहीं करते हैं। यशायाह भविष्यद्वक्ता ने भी आत्मा से प्रेरित होकर लिखा: "क्योंकि जिस प्रकार जवान पुरूष एक कुमारी को ब्याह लाता है, वैसे ही तेरे पुत्र तुझे ब्याह लेंगे; और, जैसे दुल्हा अपनी दुल्हिन के कारण हर्षित होता है, वैसे ही तेरा परमेश्वर तेरे कारण हर्षित होगा।।" (यशायाह ६२:५)

<u>प्रश्न २)</u> जब आप एक स्त्री और पुरूष के बीच में विवाह सम्बन्ध के बारे में सोचते हैं तो आप किन रीति-रिवाजों के बारे में सोचते हैं जो शायद परमेश्वर और उसकी कलीसिया के सम्बन्ध को दर्शाता है?

पहली बात जो विवाह समारोह में इस स्वर्गीय मिलन के बारे में बताती है वह यह है कि दुल्हिन अपने माता-पिता को छोड़ देती है और नया जोड़ा आपस में एक हो जाता है। प्रेरित पौलूस दूसरी पत्री में मसीह के साथ एक होने की बात लिखता है जब वह विवाह के बारे में लिखता है:

"32 यह भेद तो बड़ा है; पर मैं मसीह और कलीसिया के विषय में कहता हूं। 33 पर तुम में से हर एक अपनी पत्नी से अपने समान प्रेम रखे, और पत्नी भी अपने पति का भय माने"।।(इफिसियों ५:३१-३२)

पौलूस दो स्तर पर बात कर रहा है, एक पुरुष और उसकी पत्नी के सम्बन्ध के बारे में लेकिन ईश्वरीय मिलन के बारे में भी मसीह और उसकी दुल्हिन-कलीसिया के बीच में। कुछ रहस्यमयी तरीके से हमें मसीह के साथ एक जीवंत मिलन में लाए गए हैं। क्या उसने नहीं कहा, "सच्ची दाखलता मैं हूं; और मेरा पिता किसान है। .... तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुम में: जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे, तो अपने आप से नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो तो नहीं फल सकते।" (यहुन्ना १५:१,४)। दूसरी बात यह है कि दुल्हिन दुल्हे का पारिवारिक नाम धारण कर लेती है। हमें "मसीही" नाम से जाना जाता है और बाइबिल कहती है उसका नाम हमारे माथों पर लिखा हुआ होगा। (प्रकाशितवाक्य २२:४) नाम मसीह के स्वरूप को दिखाता है और हमारे माथे भी हमारे विचारों, हमारी सोच को दर्शाते हैं। कभी सोचता हूँ कि उँगली पर अंगूठी किस चीज़ को दर्शाती है? शायद इस बात को कि अंगूठी का कोई अंत नही होता। एक शादी में हर एक चीज़ जो दुल्हे की है वह दुल्हिन की भी हो जाती है। उसी प्रकार से, स्वर्ग के संसाधन कलीसिया को दिए गए हैं जो कि मसीह की दुल्हिन है। हमें केवल यह ज़रूरत है कि हम उससे माँगें क्योंकि उसने प्रतिज्ञा की है, "और जो कुछ तुम मेरे नाम से मांगोगे, वही मैं करूंगा कि पुत्र के द्वारा पिता की महिमा हो।" (यहुन्ना १४:१३) उसने अपनी दुल्हिन को कुछ भी चीज़ से वंचित नहीं है।

बाइबिल बताती है कि उसने हमें हर वह वस्तु दी है जो जीवन के लिए ज़रूरी है। (२ पत्रस १:३) दुल्हिन भी श्वेत पहनती है जो शुद्धता के बारे में बताता है, जैसे अपने विवाह के दिन में मसीह की दुल्हिन भी अच्छा, चमकता और साफ़ मलमल पहनेगी।

6 इन्हें अधिकार है, कि आकाश को बन्द करें, कि उन की भविष्यद्वाणी के दिनों में मेंह न बरसे, और उन्हें सब पानी पर अधिकार है, कि उसे लोहू बनाएं, और जब जब चाहें तब तब पृथ्वी पर हर प्रकार की विपत्ति लाएं। 7 और जब वे अपनी गवाही दे चुकेंगे, तो वह पशु जो अथाह कुण्ड में से निकलेगा, उन से लड़ कर उन्हें जीतेगा और उन्हें मार डालेगा। 8 और उन की लोथें उस बड़े नगर के चौक में पड़ी रहेंगी, जो आत्मिक रीति से सदोम और मिसर कहलाता है, जहां उन का प्रभु भी क्रूस पर चढ़ाया गया था।(प्रकाशित वाक्य१९:६-८)

<u>प्रश्न ३)</u> यदि उद्धार और अनन्तकाल पूरी तरह से वरदान है (और यह सचमुच हैं) तो इसका क्या अर्थ है कि दुल्हिन ने अपने आपको तैयार कर लिया है? हम अपने आपको किस प्रकार तैयार करते हैं?

क्या आप कलपना कर सकते हैं कि आप जो मसीह को जानते हैं आपके लिए कैसा होगा कि आप सचमुच में उस क्षण में होंगे जहाँ आप बड़ी भीड़ के साथ परमेश्वर के लिए हाल्लिलूयाह चिल्ला रहे होंगे। कलपना कीजिए कि विश्वास की लड़ाई खत्म हो चुकी और आप जल्द ही मेम्ने के विवाह समारोह में जानेवाले है। कैसे कोई परमेश्वर के साथ इस तरह का सम्बन्ध नहीं चाहेगा? आपस में मिले उन सब स्वरों का इतना बड़ा शोर था कि वह बहुत जल का सा शब्द सुनाई पड़ा; इसी प्रकार से प्रभु के छुड़ाए हुओं का आनन्द बहुत बड़ा होगा। वह कितना खुशी का दिन होगा! क्या आपको नही लगता कि प्रभु यीशु के चेहेरे पर कितना महान आनन्द होगा जब हम उस दिन में उसकी ओर देखेंगें। वह आपकी ओर ऐसे देखेगा जैसे कि वह उस कार्य के परिणाम को निहार कर रहा है जो उसने क्रूस पर अपने लोगों के लिए किया। यहाँ मैं सी.एच.स्परगन के शब्दों को कहता हूँ।
मेम्ने का विवाह पिता के अनन्त वरदान का परिणाम है। हमारा प्रभु कहता है, "वे तेरे थे और तूने उनको मुझे दिया।" उसकी प्रार्थना थी, पिता मेरी इच्छा यह है कि जो तूने मुझे दिए हैं वे भी वहाँ हो जहाँ मैं हूँ। ताकि वे मेरी महिमा को देखें जो तूने मुझे दी है क्योंकि संसार की नीव से पहले तूने मुझसे प्रेम किया। पिता ने चुनाव किया और चुने हुओं को अपने पुत्र को उसका भाग होने के लिए दे दिया। उनके लिए उसने छुटकारे की वाचा में प्रवेश किया जहाँ उससे प्रतिज्ञा ली गई कि निशचित समय में वह उनका स्वभाव ले ले, उनके अपराधो के लिए दाम चुकाए और उनको अपना बनाने के लिए स्वतन्त्र करे। प्रिय, जो अनन्तकाल की सभाओं में तय किया गया और वहाँ उच्चतम दलों के बीच में निर्धारित कर लिया गया वह उस दिन में अपने बिलकुल अंत में पहुँचाया गया जब मेम्ना हमेशा के लिए अपने पास उन सबको ले लेता है जिन्हें उसके पिता ने पहले से ही उसको दे दिया है।

<u>दूसरा</u> – यह उस मँगनी का पूरा होना है जो उन दोनों के बीच अपने समय में हुई। मैं बहुत विस्तार से फ़रक दिखाने की कोशिश नहीं करूँगा। लेकिन जहाँ तक आपकी और मेरी बात है प्रभु यीशु ने धार्मिकता में हम में से हर एक की मँगनी अपने साथ तब कर ली जब हमने पहले उस पर विश्वास किया। तब उसने हमें अपना बनाया और पहले अपने आपको हमारा होने के लिए दे दिया ताकि हम गा सकें - "मेरा प्रिय मेरा है और मैं उसका"। यह एक विवाह का सार है। इफ़ीसियों की पत्री में पौलूस प्रभु को इस प्रकार से दर्शाता हैं जैसे उनका कलीसिया से पहले ही विवाह हो चुका हो। इसको पूर्वी संस्कृति से दर्शाया जा सकता है कि जब दुल्हिन की मँगनी होती है तो सब मंगनी

के समारोह में विवाह के शुद्धिकरण की सब बातें सम्मिलित होती हैं। लेकिन फिर भी काफ़ी समय का अन्तराल होता है इससे पहले कि दुल्हिन को अपने पति के घर ले जाया जाए। वह अपने पहले घराने के साथ रहती है और अभी तक अपने रिश्तेदारों और अपने पिता के घर को नहीं भूली है जबकी वह अभी भी सच्चाई और धार्मिकता में विवाहिक संबंध में बंधी है। बाद में, वह एक निर्धारित दिन में, घर लाई जाती है, वह दिन जिसे हम वास्तविक विवाह कह सकते हैं। फिर भी पूरब वासियों के लिए मँगनी, विवाह का बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा है।

नवविवाहित जोड़े का घर

मध्य-पूर्वी शादियों में, यह दूल्हे की ज़िम्मेदारी है कि शादी के बाद वह जोड़े के रहने के लिए स्थान तैयार करे या बनाए।

आईए मिल कर हम उस स्थान को देखें जो परमेश्वर ने उनके लिए तैयार किया है जो उससे प्रेम करते हैं:

1 फिर मैं ने नये आकाश और नयी पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहिला आकाश और पहिली पृथ्वी जाती रही थी, और समुद्र भी न रहा। 2 फिर मैं ने पवित्र नगर नये यरूशलेम को स्वर्ग पर से परमेश्वर के पास से उतरते देखा, और वह उस दुल्हिन के समान थी, जो अपने पति के लिये सिंगार किए हो। 3 फिर मैं ने सिंहासन में से किसी को ऊंचे शब्द से यह कहते सुना, कि देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है; वह उन के साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उन के साथ रहेगा; और उन का परमेश्वर होगा। 4 और वह उन की आंखोंसे सब आंसू पोंछ डालेगा; और इस के बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; पहिली बातें जाती रहीं। 5 और जो सिंहासन पर बैठा था, उस ने कहा, कि देख, मैं सब कुछ नया कर देता हूं: फिर उस ने कहा, कि लिख ले, क्योंकि ये वचन विश्वास के योग्य और सत्य हैं। 6 फिर उस ने मुझ से कहा, ये बातें पूरी हो गई हैं, मैं अलफा और ओमिगा, आदि और अन्त हूं: मैं प्यासे को जीवन के जल के सोते में से सेंतमेंत पिलाऊंगा। 7 जो जय पाए, वही इन वस्तुओं का वारिस होगा; और मैं उसका परमेश्वर होऊंगा, और वह मेरा पुत्र होगा। (प्रकशित वाक्य २१:१-७)

पवित्र नगर ऊपर से उतरता है। ध्यान दीजिए कि यह वह चीज़ नहीं है जो हम पृथ्वी पर बनाते हैं लेकिन वह चीज़ है जो मसीह ने बनाई है और उसके लोगों के लिए पृथ्वी पर उतरती है। यह नया वाशिंगटन या नया लंदन नहीं है बल्कि यह नया यरुशलेम है जहाँ परमेश्वर ने सदा निवास करने की प्रतिज्ञा की है। उसने सुलैमान को बताया कि उसने सदा के लिए यरुशलेम में अपना नाम ठहराया है। मेरी आँखे और मेरा मन नित्य वहीं लगे रहेंगें। (१ राजा ९:३) क्या यह कारण है कि इस्राएल के परमेश्वर के बैरियों को यरुशलेम इतना अधिक चाहिए? मेरा विश्वास है कि वे यरुशलेम से परमेश्वर का नाम बिलकुल खत्म कर देना चाहतें हैं और मसीह विरोधी शैतान स्वयं यरुशलेम के मध्य में उस पवित्र स्थान में बैठकर अपने आप को बड़ा ठहराना चाहता है? (२ थिस्सलुनिकियों २:४)

दूसरा पद बताता है कि नया यरुशलेम दुल्हिन के समान तैयार होकर नीचे उतरता है। मैं इस पद को नहीं समझा सकता; कुछ लोग इस तरह से वाक्य को समझते हैं कि नगर स्वयं ही दुल्हिन है। जो उस स्थान पर हैं वह हमें स्मरण दिलाते हैं कि हम जीवते पत्थरों के समान एक मंदिर बनते जा रहे हैं: "तुम भी आप जीवते पत्थरों की नाईं आत्मिक घर बनते जाते हो, जिस से याजकों का पवित्र समाज बन कर, ऐसे आत्मिक बलिदान चढ़ाओ, जो यीशु

मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्राह्य हों।"(१ पत्रस २:५) इस बात के जवाब में, प्रकाशितवाक्य २१:२७ कहता है कि, जिनके नाम ममने के जीवन की पुस्तक में लिखे हैं वे वहाँ रहेंगें। हमें बताया गया है कि परमेश्वर स्वयं उनके साथ रहेगा। यह नगर हमारा निवास स्थान होगा और परमेश्वर स्वयं हमारे साथ रहेगा। आईए देखें यहुन्ना प्रकशितवक्य की पुस्तक में क्या लिखता है:

9 फिर जिन सात स्वर्गदूतों के पास सात पिछली विपत्तियों से भरे हुए सात कटोरे थे, उन में से एक मेरे पास आया, और मेरे साथ बातें कर के कहा; इधर आ: मैं तुझे दुल्हिन अर्थात मेम्ने की पत्नी दिखाऊंगा। 10 और वह मुझे आत्मा में, एक बड़े और ऊंचे पहाड़ पर ले गया, और पवित्र नगर यरूशलेम को स्वर्ग पर से परमेश्वर के पास से उतरते दिखाया। 11 परमेश्वर की महिमा उस में थी, ओर उस की ज्योति बहुत ही बहुमूल्य पत्थर, अर्थात बिल्लौर के समान यशब की नाईं स्वच्छ थी। 12 और उस की शहरपनाह बड़ी ऊंची थी, और उसके बारह फाटक और फाटकों पर बारह स्वर्गदूत थे; और उन पर इस्त्राएलियों के बारह गोत्रों के नाम लिखे थे। 13 पूर्व की ओर तीन फाटक, उत्तर की ओर तीन फाटक, दक्खिन की ओर तीन फाटक, और पश्चिम की ओर तीन फाटक थे। 14 और नगर की शहरपनाह की बारह नेवें थीं, और उन पर मेम्ने के बारह प्रेरितों के बारह नाम लिखे थे। 15 और जो मेरे साथ बातें कर रहा था, उसके पास नगर, और उसके फाटकों और उस की शहरपनाह को नापने के लिये एक सोने का गज था। 16 और वह नगर चौकोर बसा हुआ था और उस की लम्बाई चौड़ाई के बराबर थी, और उस ने उस गज से नगर को नापा, तो साढ़े सात सौ कोस का निकला: उस की लम्बाई, और चौड़ाई, और ऊंचाई बराबर थी। 17 और उस ने उस की शहरपनाह को मनुष्य के, अर्थात स्वर्गदूत के नाप से नापा, तो एक सौ चौवालीस हाथ निकली। 18 और उस की शहरपनाह की जुड़ाई यशब की थी, और नगर ऐसे चोखे सोने का था, जा स्वच्छ कांच के समान हो। 19 और उस नगर की नेवें हर प्रकार के बहुमूल्य पत्थरों से संवारी हुई तीं, पहिली नेव यशब की थी, दूसरी नीलमणि की, तीसरी लालड़ी की, चौथी मरकत की। 20 पांचवीं गोमेदक की, छठवीं माणिक्य की, सातवीं पीतमणि की, आठवीं पेरोज की, नवीं पुखराज की, दसवीं लहसनिए की, ग्यारहवीं धूम्रकान्त की, बारहवीं याकूत की। 21 और बारहों फाटक, बारह मोतियों के थे; एक एक फाटक, एक एक मोती का बना था; और नगर की सड़क स्वच्छ कांच के समान चोखे सोने की थी। 22 और मैं ने उस में कोई मंदिर न देखा, क्योंकि सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, और मेम्ना उसका मंदिर हैं। 23 और उस नगर में सूर्य और चान्द के उजाले का प्रयोजन नहीं, क्योंकि परमेश्वर के तेज से उस में उजाला हो रहा है, और मेम्ना उसका दीपक है। 24 और जाति जाति के लोग उस की ज्योति में चले फिरेंगे, और पृथ्वी के राजा अपने अपने तेज का सामान उस में लाएंगे। 25 और उसके फाटक दिन को कभी बन्द न होंगे, और रात वहां न होगी। 26 और लोग जाति जाति के तेज और विभव का सामान उस में लाएंगे। 27 और उस में कोई अपवित्र वस्तु था घृणित काम करनेवाला, या झूठ का गढ़ने वाला, किसी रीति से प्रवेश न करेगा; पर केवल वे लोग जिन के नाम मेम्ने के जीवन की पुस्तक में लिखे हैं॥(प्रकशितवक्य २१:९-२७)

<u>प्रश्न ४)</u> जो घर परमेश्वर आपके लिए बना रहा है उसके वर्णन में क्या चीज़ आपका ध्यान आकर्षित करती है? क्यों सर्व्शक्तिमान परमेश्वर और मेमना (मसीह) पृथ्वी ग्रह पर नए यरुशलेम में घर बसायेंगे जबकि परमेश्वर के पास अपना सिंहासन स्थापित करने के लिए पूरा सृष्टि है? (पद २२)

इस नगर की शहरपनाह १४४ हाथ मोटी है। वह २१६ फ़ीट के बराबर है। हमें यह भी बताया गया है कि नए यरुशलेम का अकार सढ़े सात सौ कोस का है और उसकी चौड़ाई लम्बाई के समान है यह क्षेत्र ऐसा फैला हुआ है जैसे कैलिफ़ोर्निया से पूर्वी अमेरीका के अपालेकियन पर्वत और कनाडा से मौक्सिको तक। भूमी का स्तर की केवल लगभग दो (स्कवेर) वर्ग मील है। इस बात के न भूले कि जो दूरी है वह उतनी ऊँची है जितनी कि उसकी चौड़ाई और लम्बाई (पद १६)। यदि प्रत्येक मंज़िल १२ फ़ीट की है तो उसका मतलब है ६००,००० मंज़िलें। सैंकड़ों लोग वहाँ रह पाएँगें और हर व्यक्ति के पास कई वर्ग मील जगह होगा। नगर का परिमाप एक सिद्ध वर्ग है। सुलेमान के मन्दिर में एक कमरा था जिसमें महायाजक वर्ष में एक बार मारे गए पशु के लहु के साथ उस मोटे परदे के पीछे प्रवेश करता था जो मनुष्य को परमेश्वर की उपस्तिथि से अलग रखता था। यह वही परदा था जो क्रूस पर मसीह की बलिदानी मृत्यु के समय फट गया था। (मत्ती २७:५१) अति पवित्र स्थान का वह कमरा जहाँ अकेले परमेश्वर वास करता था, बीस हाथ का वर्ग था। (१ राजा ६:२०)

नए यरुशलेम के आयाम इस सच्चाई को दिखाते है कि परमेश्वर चाहता है कि मनुष्य सर्वदा उसके साथ रहे। यह तस्वीर है इस बात की कि मनुष्य को परमेश्वर की उपस्थिति में बुलाया जा रहा है कि वह उसके और उसके लोगों के साथ हमेशा के लिए अति पवित्र स्थान में संगति करें। कितना अच्छा रहा होगा प्रेरित यहुन्ना के लिए, जिसने प्रकाशितवाक्य लिखा कि वह स्वयं अपना नाम एक नींव के पत्थर पर देखता है। (प्रकाशितवाक्य २१:१४) हम अभी तक यह नहीं जानते कि इस संसार में मसीह के लिए हमारे प्रयास दूसरों पर कितना असर डालते हैं यह केवल परमेश्वर जानता है, पर यह रुचिकर है कि यहुन्ना देख पाया कि उसका जीवन अनन्तकाल के लिए भिन्नता ले कर के आया है।

यह यीशु की प्रार्थना का उत्तर है, "कि पिता वे सब एक हैं जैसे तू मुझमें है और मैं तुझमें" काश वे हम में भी हों ताकि संसार विश्वास कर ले कि तूने मुझे भेजा है। (यहुन्ना १७:२१) नया यरुशलेम वह स्थान है जहाँ मसीह अपनी दुल्हिन के साथ अनन्तकाल का आनन्द उठाता है। एक स्थान जहाँ एक हृदय और एक मन होगा, जहाँ हम हमेशा और हमेशा के लिए उसके साथ होंगे।

“और उसका मुंह देखेंगे, और उसका नाम उन के माथों पर लिखा हुआ होगा”। (प्रकाशितवाक्य २२:४)

वह कितने आनन्द की बात होगी कि हम मसीह को देखें, उसकी सुन्दरता को निहारें और उसके साथ सम्बन्ध में रहें। क्या आप देख पा रहे हैं कि स्वयं परमेश्वर आपको कितना मूल्यवान समझता है? दाऊद ने कहा, "मनुष्य क्या है कि तू उसका ध्यान करे" हम परमेश्वर के लिए कितने मूल्यवान हैं कि पूरी सृष्टि में से सामर्थी परमेश्वर और उसके पुत्र के रहने के लिए, उन्होंने नए यरुशलेम में मनुष्य के साथ रहने का चुनाव किया। आप चाहें जहाँ भी हों, स्वर्ग का परमेश्वर आपको ढूंढ रहा है कि आप उसके घर आँए और सर्वदा के लिए उसके साथ रहें। आमंत्रण आपको और आपके परिवार के लिए है। इसको कमाने के लिए आप कुछ नहीं कर सकते, क्योंकि यह केवल परमेश्वर के अनुग्रह द्वारा है, परमेश्वर का ऐसा अनुग्रह जिसके हम योग्य नहीं है। क्या आप अपना जीवन उसको देंगे? वह चाहता है कि आप जान लें कि स्वर्ग आपका अनन्त घर है।

समाप्त करने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें या वेब ऐडरेस को अपने ब्राऊज़र में पेस्ट करें। देखने और आराधना करने के लिए सात मिनट लगेंगे।

http://www.youtube.com/watch?v=qSI4lNTdhgo&feature=related

प्रार्थना: पिता तेरा धन्यवाद हो मुझसे तेरी इच्छा के विषय में मेरे अनन्त ठिकाने के बारे में बात करने के लिए। मुझे प्रतिदिन स्मरण दिलायें कि आप मेरे लिए जगह तैयार कर रहें हैं और यह कि आप उस स्थान के लिए मुझे तैयार कर रहें हैं वह जीवन जो आनेवाला है। मुझे तैयार कर कि मैं अनन्तकालीन घर में तेरे साथ रहूँ। आमीन॥